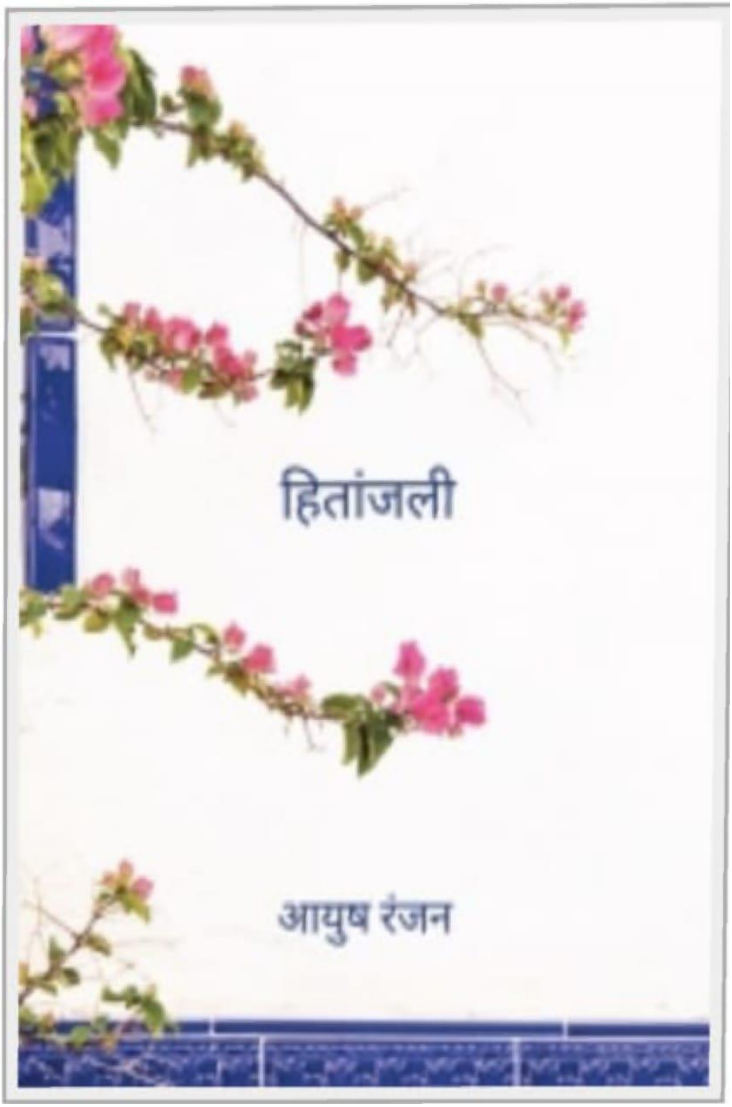
हितांजली
आयुष रंजन

प्रस्तावना

कविताओं के माध्यम से हम अपनी बात दुसरो तक आसानी से गुप्त तरीके से पहुँचा सकते है।यह मनोरंजन का भी एक साधन है।इसके द्वारा हम अपनी दिल की बात भी जाहिर कर सकते है।साधारण तौर पर अगर देखा जाए तो कविता में नव प्रकार के रस होते है।इन नौ प्रकार के रस पर ही एक कविता की रचना हो सकती है।इन नौ रासो को धयान में रखते हुए मैं अपनी पहली पुस्तक हितांजली आप सब के सामने प्रस्तुत करता हु।

इस पुस्तक की रचना में मेरे प्रधानाचार्य फादर रेजी सी वर्गीस ने काफी मदद की है। उनका सम्मान करते हुये मैने एक कविता उन पर भी लिखी है।
आसा है आप सब को पसंद आएगी।
तो आइए इस पुस्तक की शुरुआत करते है गीता की एक प्रमुख श्लोक से-

यदा यदा ही धर्मस्य
ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थान अधर्मस्य
तदात्मानं सृजाम्यहम।

गुरुदेव

गुरुदेव!मैं आपका धन्यवाद करता हूँ।जिस कुल में आपका जन्म हुआ वो कुल महान है।आपने हममे छिपा वो गुण दिखाया जिसे हम खोज नही पा रहे थे।आपके आशीर्वाद से हमें साहित्य का वो रास्ता दिखा जो स्वयं में महान है।

अपने हमारे लिए जितना कुछ किया है एवं आपके जीवन को लक्ष्य करके एक कविता प्रस्तुत करता हूँ।आसा है आपको पसंद आएगी और आप अपना आशीर्वाद ऐसे ही देते रहेंगे।

भिलाई का यह तारा
जग में नाम कमाए।
कुल का नाम रौशन कर
फादर वर्गीस कहलाये।

सन अरसठ में था हुआ जन्म
न खेलने का था न कोई गम।
अमूल्य घजाना ज्ञान के
मन को प्रकाशमय करके

इस अज्ञानी को दे।
इस फूल को वृक्ष बना दे।
हमारे कर्तव्यों का बोध कराये
फादर वर्गीस कहलाये।

आप न देखेंगे तो कौन देखेगा?
आपके बिना यह फूल मुरझा जाएगा।
इस फूल को वृक्ष बना दे
कृपया मन को प्रकाशमय कर दे।

धरा पर है श्रेठ गुरु अनेक
आप भी है उनमें से एक।
अपने दी है हमें एक अलग नई पहचान
आपके लिये प्रस्तुत है हमारी प्यारी जान।

भिलाई का यह तारा
जग में नाम कमाए।
कुल का नाम रौशन कर
फादर वर्गीस कहलाये।

हमारी प्यारी शिक्षिका

देती है बिन पैसो का ज्ञान
वो है गणित की शिशिका महान।
एम जी एम की है शान
हमारी प्यारी अध्यापिका।

हमे हमेशा डाट से बचाए
चाहे क्यों न हो प्रधानाचार्य।
हमे हमेशा प्यार से समझाती
चाहे क्यों हो गणित का कठीन प्रश्न।

अगर हम समझ न आये
फिर भी वो प्यार से समझाए।

चाहे हजार बार क्यों न समझाती
समझाने से वो हार न मानती।

हैं शिक्षिका वो ऐसी महान
हम सब करते उनका सम्मान
उनकी हैं।एक अलग पहचान।

इंतजार

एक राज्य था बहुत बडा
जिसका पहड़ा था कड़ा।
उसका राजा था बहुत महान
जो करता सबका सम्मान।

एक दिन निकल सैर पर
बर्फ ले टुकड़े आये उसके पैर पर।
कुछ ज्यादा ही थी ठंड क्योकिं ,
हवा भी बह रही थी मंद-मंद।

मुख्य द्वार पर था बूढा पहरेदार
जिसके कपड़े हो गए थे जालीदार।
राजा ने उससे कहा-
ले लो तुम मेरे पुराने कपड़े गर्म
जिसमे रहोगे तुम कुछ गर्म।

परंतु राजा से हुई एक खता
बूढ़े पहरेदार का था न कोई पता।
परंतु बाहर था वो मरा हुआ
एक कपड़े पर था कुछ लिखा हुआ

-ना कराना तू किसी से इंतजार
वचन को पुरा करना निरंतर।
ना देना तुम उम्मीद झूठी
इससे बेहतर है दो वक्त का दो रोटी।

यह देख राजा हुए खिन
वह हुआ बिल्कुल छीन।
पहरेदार के बेटे से मांग उसने माफी
तुरंत बनाया उसे अपना खजांची।

शहंशाह – ऐ हिन्द

एक राजा था ऐसा महान
जो करता सबका सम्मान।
परंतु विवाह के पहले थी कुछ और कहानी।
विवाह उपरांत बदल गया उसका दुश्मन जानी।
युद्ध थी इसकी रग-रग में
विजयी थी इसकी मग-मग में।
जजिया कर को इसने हटाया।

दंगे-फसाद को इसने दूर किया
अबुल फजल जैसे ग्रंथकार
तो तानसेन जैसे संगीतकार।
टोडरमल थे कर मंत्री
तो विदुशक थे बीरबल प्रश्न मन्त्री।
बीरबल-तानसेन की दोस्ती
थी राज-विखयात।
आतंक-ऐ कलियुग

क्यो होता है गरीबो के साथ अन्याय,
कहाँ खो गया है इनका न्याय?
क्या दब गया है वो इस युग कलि में,

या चढ़ गया है पाप की बली?
कहाँ गए युधिष्ठिर धर्मराज,
कहाँ गया राम का न्यायप्रिय रामराज्य?
क्या दब गया है धर्म?

कानून भी पड़ गया है नर्म।
अधर्मियो का है पलड़ा भारी,
कहा हैं वो पाश धारी?
वकालत तो थी एक पेशा
कब से बन गया ऐसा?
कानून भी बिकता,वकील भी बिकता,
बीच मे एक फरियादी फसता।

महाराज बली

त्रेता युग के आरंभ में महाराज बलि हुए।बलि थे तो एक असुर कुल के फिर भी नारायण के बहुत बड़े भक्त थे।इसके एक मात्र कारण इनके पितामह भक्त प्रह्लाद थे ।

बलि कुछ वर्षों के लिए स्वर्ग के भी राजा बने।इसके बाद उन्होंने इतना दान – पुण्य किया कि त्रेता युग भी सत युग बन गया था।

उधर कलियुग को भय था कि अगर ऐसे ही चलता रहा तो मेरा राज्य कभी स्थापित नही हो पाएगा इसलिए उसने नारायण से मदद मांगी।

इसलिए नारायण ने वामन अवतार लेकर एवं बलि को पाताल का राजा बनाकर सृष्टि चक्र को पुनः पहले जैसा किया।

इसे लक्ष्य कर के एक कविता प्रस्तुत करता हूँ।आशा है आपको पसंद आएगी।

युग त्रेता में हुए महाराज बलि
जिनका शत्रु था युग कलि।
युग त्रेता भी बन गया था सतयुग
होता कैसे स्थापित कलि युग।
कलि ने मांगा मदद हरि से
हुआ वो जो था कल्पना पर से।

हरि ने लिया वामन अवतार
बलि कर रहे थे दान तरह हर बार,
महाराज वामन आये इस बार।
माँगी धरती मात्रा पग तीन।
बलि ने सहस्र स्वीकार किया
वामन ने अपना रूप विस्तार किया।

धरती माँपी, अम्बर माँपी,
तीसरे पग के लिए जगह मांगी।
बलि ने सिर अपना प्रस्तुत किया
हरि ने सहस्र स्वीकार किया
बाली को पाताल का राजा बनाया।

एम जी एम विद्यालय का दृश्य

एम जी एम विद्यालय

श्रेष्ठ विद्यालयों में है एक
इसके जैसा ना दूजा अनेक ।
अलग है इसकी आन,बान और शान
बोकारो का है शान।
काम नहीं हम शिथार्थी
हम सब है इसके विद्यार्थी।
हैं यह विद्यालय हमारा प्यारा।

सके जैसा न दूजा न्यारा।
खेल,संगीत,नृत्य का है संगम यहाँ
इसके जैसे विद्यालय पाओगें कहा?
तमसो मा ज्योर्तिगमय
है इसका नियम।
असतो माँ सद्गमय
है प्रणाली प्राचीन।

समय

समय का चक्र बड़ा बलवान
पथिक तुम न बनना अनजान।
नहीं हैं कोई इसके समान।
इसके सामने न कोई बड़ा, न कोई छोटा।
यह चक्र कभी न रुकेगा
न अब तक यह रुका है।
आज है अच्छा तो कल होगा बुरा।

कब क्या हो किसने हैं जाना
आज हो बादशाह तो,
कल होंगे गुलाम।
ना देना तू इसे इल्जाम।
समय का चक्र बड़ा बलवान
पथिक तुम न बनना अनजान।
न है कोई इसके समान।

"अब खुश और दुखी दोनो व्यक्ति के लिए"-
"यह समय जल्द गुजर जाएगा।"

मित्रता

मित्रता होती है वो चीज
जो एक बार हो जाये तो
जीवन भर निभती है।
न चाहिए इसमे कोई धोखा
नही तो खो सकते है आप मित्रता का यह मौका।
सभी रिश्ते होते है जन्म से
पर इसे बनाना पड़ता है स्वयं से।

कुछ मित्र आते हैं शत्रु भेष में
तो कुछ देते है धोखा आकर आवेश में।
पर आप कभी न ऐसा करना
खास मित्रो को कभी न रुलाना।
-मित्रो की खुशी में खुश होना
उनके दुख में उनकी
सहायता करना।

ध्यान

ध्यान हैं वो शक्ति,
जिसके समान न कोई भक्ति।
धयान से आप जीत सकते है यह सारा संसार
नही है इएसके समान कोई प्रयास।
ढाई अक्षर का यह शब्द ध्यान
बढ़ा सककता है आपकी प्रतिष्ठा और मान।
परंतु है नही यह प्रयास आसान।

जिसने किया इसका प्रयास
जीत लिया समस्त संसार।
धनुर्धर अर्जुन भी थे उनमें से एक
इसके ज्ञात है ऋषि अनेक।
हैं यह सफलता का महामंत्र
ना है इसके समान कोई मंत्र
सदा करे इस मंत्र का जाप।

सम्राट विक्रमादित्य

उज्जैन में हुआ विक्रमादित्य सम्राट
न था कोई इसके समान।
दिया सदैव न्याय का साथ
नही था इसके अंदर स्वार्थ।
था यह अंतिम चक्रवर्ती सम्राट
इसकी न्यायप्रियता है इसका प्रमाण।
युग मे होते हैं ऐसे सम्राट।

बेताल को पकड़ने की थी शक्ति
महाकाल की करता भक्ति।
महाकाली ने दिया इसे दो बेताल
जो सहायता करते इसकी हर काल।
स्वर्गपति बनाने का मिला प्रस्ताव
परंतु इंद्रा का सिंहासन त्याग इसने
जो कभी न हुआ, वो किया इसने।

युधिष्ठर

भारतवर्ष के अनोखे सम्राट
न था कोई इनके समान।
न्याय थी इनके रग-रग में
सत्य थी इनकी मग-मग में।
धर्म का सदा थमा हाथ
मृत्यु उपरांत भी न भूले थे
भ्राता कारण का साथ।

महाराज पाण्डु के थे ज्येष्ठ पुत्र
पाई विजई इन्होंने उस कुरुक्षेत्र।
इन्द्रप्रस्थ को इन्होंने बसाया
कुरूवंश की मर्यादा निभाया।
कुरूवंश के प्रथम सम्राट
जिन्हें याद था हर एक प्रजा का नाम
जो करते इनका समान।

दानवीर कर्ण

हुआ था राजवंश में जन्म
परंतु समाज मे आया सुतपुत्र के नाम।
कुंती ने त्यगा इसे
परंतु पुत्रहीन सारथी
अधिरथ ने अपनाया इसे।
परिवर्तन में था रखता विश्वास।

मित्र दुर्योधन ने बदल
दिया इसका जन्म इतिहास।
सुतपुत्र से बना यह अंगराज महान।
जरासन्ध बलवान भी न था इसके समान।
परंतु अधर्म ने बदल दी
इसकी भाग्य की चाल

अनायास ही हर लिया
इसे वह दुष्ट काल।
यूँ न कहलाया था यह दानवीर
दे दिया अपना अभेद,
कवच-कुंडल भी।

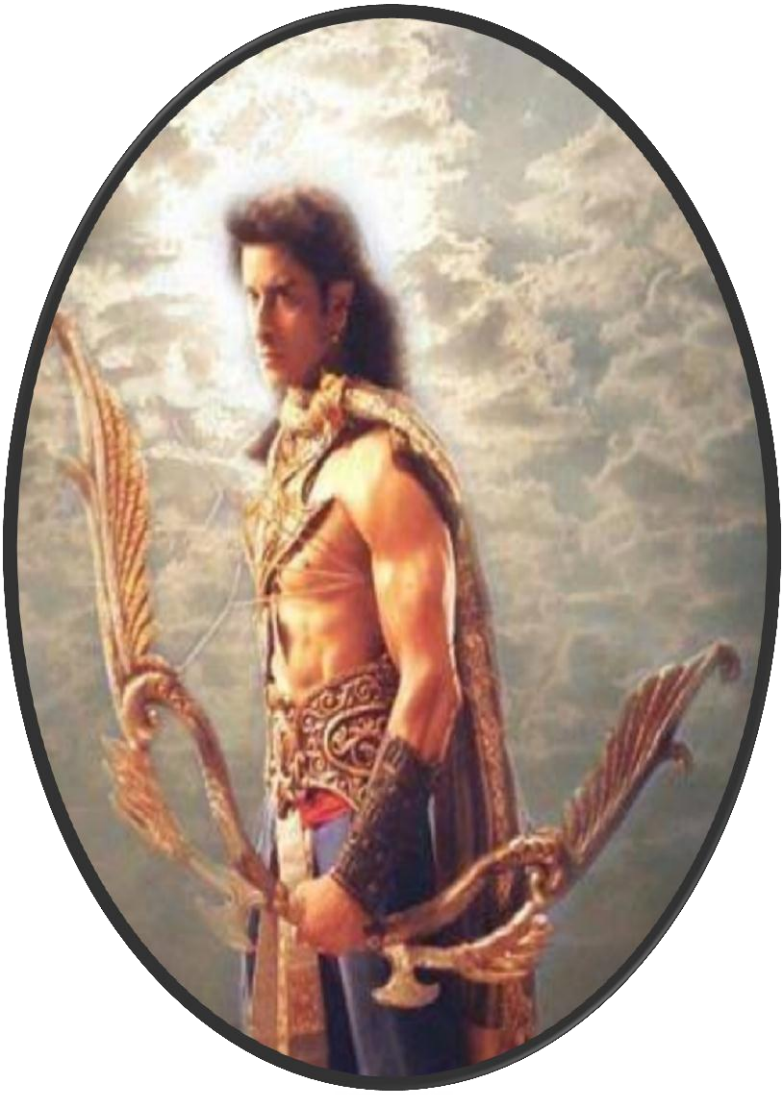

कलम

मैं तो एक कलम हूँ,
छोटा सा मैं कलम हूँ।
पर तलवार को दे सकता मात
लेखकों का हु मैं तात।
कवियों का हूँ मैं हथियार
शिक्षको का हूँ मैं औजार।
न है कोई मेरे समान।

हैं मेरे इतिहास काफी पुराना
मेरे प्रकार हैं नाना।
देखकर लिखना उंगलियों से
हुआ मेरे जन्म मोर पंख से।
आया निब धातु का
नए कलम यूरोप का।
आज है कलम के कई प्रकार
मैं हूँ आज निर्विकार।

महाराणा प्रताप

राजपूत के थे युद्ध वीर
न टिक इनके सामने कोई मुग़ल वीर।
उदयसिंह के थे पुत्र ज्येष्ठ
इनका अश्व था सबसे श्रेठ।
मुग़लो के सामने नही
माना हार इन्होंने।
जंगलों में रहना किया पसंद इन्होंने।

थी प्रताप के पास ताकत इतना
उंगलियों से कर सकते सिक्का चपटा।
मुग़लों के दांत खट्टे कर
पिता का नाम रौशन कर।
प्रताप महाराणा कहलाये।
चेतक प्रिय था इनका अश्व
जो जानता इनकी बाते सर्वस्व।
हमारा प्यारा भारत

भारत देश है हमारी माता
इससे है हमारी पुरानी नाता।
इस देश मे हुआ हमारा जन्म
इस देश के लिए करेंगे हम सब कर्म।
न सहेंगे इस धरा का अपमान
गर्व से करेंगे हम इसका सम्मान।
कर्म कर बढ़ाएंगे हम इसकी प्रतिष्ठा और मान।

सन सैतालिश में पाई आजादी
तोड़कर बंधन उस गुलामी।
गोरो को हमने मार भगाया
गाँधी ने सत्य-अहिंसा का मार्ग दिखाया।
व्यर्थ न जाने देंगे उनका बलिदान
विश्व स्तर में दिलाएंगे
भारत को एक नई पहचान।
युद्ध

16 सहस्र सैनिक जाते हैं रण क्षेत्र में
मात्र 600 आते हैं खुसी में।
मृत सैनिको को मात्र किया जाता है याद
हो जाता है उनका घर बर्बाद।
आखिर उनके भी है बच्चे
आता जिन्हें पिता की यादें।
क्यो न लगते रोक युद्ध पर।

मिलता क्या है युद्ध से
क्योकि समाधान निकल
सकता है मात्रा बात से।
तो आओ आज ले प्रतिज्ञा
युद्ध पर रोक लगाएंगे
बातों से समाधान निकलेंगे
संसार मे शांति लाएंगे।

प्रकृति

प्रकृति की अजब हरियाली
हरती संसार से वायु जहरीली।
देकर हमे प्राण वायु
करती हूं पर उपकार बहुत।
पर कुछ दशकों से बदली बात
मनुष्य करने लगे प्रकृति
को अनावश्यक आघात।

आज हो रहा है इसका दुगुना दोहन
नही कर पा रही प्रकृति जिसका सहन।
अगर ऐसा ही चलता रहा
तो मनुष्य को हो सकता खतरा।
तो आओ आज ले यह प्रतिज्ञा
इस धरा को हम बचाएंगे
प्रकृति को एक बार दुबारा अपनी माँ बनाएंगे।

अब अंत मे मैं उन सबको धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने मेरी सहायता की है।सर्वप्रथम है मेरे प्रधानचार्य फादर रेजी सि वर्गीस जिन्होंने हमेसा मेरी सहायता की और मनोबल बढ़ाया।

मेरी अध्यापिका कंचन सिंह ने भी हमेसा मेरी मदद की है।वो हमेसा मेरी कविताओ को पढ़ती थी और उसमें सुधार करती थी।

इस पुस्तक की रचना मेंरे पिताजी सतीश रंजन कुमार ,माता किरण सिंहा और मेरा भाई प्रत्युष रंजन ने भी मेरी काफी सहायता की है।मेरी माता ने हमेसा मुझे कई बार कुछ मार्ग दिखया।मेरे पिताजी ने भी काफी सहायता की है।

मैं दिल से सबका धन्यवाद करता हूं।

—लेखक